ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(3): 184-189
www.allresearchjournal.com
Received: 03-02-2023
Accepted: 07-03-2023

डॉ. आशीष कुमार लाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीतिशास्त्र एम0 एल0 के0 पी0 जी0 कॉलेज
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. आशीष कुमार लाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीतिशास्त्र एम0 एल0 के0 पी0 जी0 कॉलेज
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश,
भारत

अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्थिति के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रूचि का अध्ययन

डॉ. आशीष कुमार लाल

सारांश
अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रुचि का अध्ययन उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अनुसूचित जाति के छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनकी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह शैक्षिक संसाधनों और अवसरों तक उनकी पहुंच को प्रभावित करती है। शोध अध्ययनों से पता चला है कि अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सीधा प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों की तुलना में आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन कम होता है। यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच की कमी, सीखने के अपर्याप्त संसाधनों और खराब घरेलू वातावरण जैसे कारकों के कारण हो सकता है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अलावा, अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक रुचि भी उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जो छात्र अपने अध्ययन में अत्यधिक प्रेरित और रुचि रखते हैं, वे कम रुचि या प्रेरित होने वालों की तुलना में अकादमिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। माता-पिता के प्रोत्साहन, शिक्षक समर्थन और सीखने के संसाधनों तक पहुंच जैसे कारक भी अनुसूचित जाति के छात्रों के शैक्षिक हित को प्रभावित कर सकते हैं।
इसलिए, प्रभावी शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए अनुसूचित जाति के छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षिक रुचि को समझना महत्वपूर्ण है जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं। इसमें छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता प्रदान करना, शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच में सुधार करना और छात्रों की प्रेरणा और जुड़ाव को बढ़ावा देने वाले सहायक सीखने के माहौल को बढ़ावा देने जैसे हस्तक्षेप शामिल हो सकते हैं। अनुसूचित जातियों विशेषतर थारू और वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों के परिवार का शैक्षिक वातावरण समान होने के कारण दोनों जातियों की शिक्षा के प्रति रूचि एक जैसी है। अतः शैक्षिक उपलब्धि भी एक जैसी है। शैक्षिक वातावरण का दोनों जातियों में न होने का कारण अशिक्षा, गरीबी और रूढ़िवादिता के तहत् पालकों में नकारात्मक दृष्टिकोण है। सामाजार्थिक स्तर का कोई भी प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि पर नहीं पड़ता है।

कूटशब्द: अनुसूचित जाति, सामाजार्थिक स्थिति, शिक्षक समर्थन, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना
अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रुचि का अध्ययन उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में शिक्षा में अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

यह शोध सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध को समझने में मदद कर सकता है, साथ ही उन रणनीतियों की पहचान करने में मदद कर सकता है जिनका उपयोग अनुसूचित जाति के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार के लिए किया जा सकता है। अनुसूचित जाति के छात्र भारत में ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समूह हैं जिन्होंने सदियों से भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार का सामना किया है। यह भेदभाव अक्सर शिक्षा और शैक्षणिक उपलब्धि तक उनकी पहुंच में परिलक्षित होता है। अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा की गई विभिन्न नीतियों और पहलों के बावजूद, उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है।

अनुसूचित जाति के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति है। भारत में कई अनुसूचित जाति के परिवार आर्थिक रूप से वंचित हैं, और यह अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने की उनकी क्षमता को प्रभावित करता है। वित्तीय संसाधनों की कमी से अपर्याप्त सीखने के संसाधन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के संपर्क में कमी और गुणवत्ता वाले शिक्षकों तक पहुंच में कमी हो सकती है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक-आर्थिक कारक जैसे कम माता-पिता की शिक्षा, माता-पिता के समर्थन की कमी और खराब स्वास्थ्य भी अनुसूचित जाति के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रुचि के बीच उनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में संबंध का अध्ययन करने के लिए, शोधकर्ता मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरीकों का उपयोग कर सकते हैं। मात्रात्मक विधियों में अकादमिक प्रदर्शन डेटा के मानकीकृत परीक्षण, सर्वेक्षण और सांख्यिकीय विश्लेषण शामिल हो सकते हैं। अनुसूचित जाति के छात्रों के अनुभवों की गहरी समझ हासिल करने के लिए गुणात्मक तरीकों में साक्षात्कार, फोकस समूह और केस स्टडी शामिल हो सकते हैं।

यह अध्ययन अनुसूचित जाति के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को निर्धारित करने में पारिवारिक पृष्ठभूमि, माता-पिता की भागीदारी, शिक्षक गुणवत्ता और स्कूल के बुनियादी ढांचे जैसे विभिन्न कारकों की भूमिका का भी पता लगा सकता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन उन प्रभावी हस्तक्षेपों और नीतियों की पहचान कर सकता है जिन्हें अनुसूचित जाति के छात्रों, विशेष रूप से आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार के लिए लागू किया जा सकता है।

अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रुचि का अध्ययन उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में शिक्षा में अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह शोध अनुसूचित जाति के छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कारकों को समझने में मदद कर सकता है और उनके अकादमिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए प्रभावी रणनीतियों की पहचान कर सकता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के 63 वर्षों के पश्चात् भी उत्तर प्रदेश राज्य के बलरामपुर क्षेत्र में 43.91 प्रतिशत लोग ही साक्षर हैं। सरकार द्वारा भरसक प्रयत्न करने के बाद भी आदिवासी क्षेत्रों में साक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत में आशातीत वृद्वि एवं विकास नहीं हो पा रहा है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी संतोषजनक नहीं है। इस शोध में बलरामपुर क्षेत्र के थारू एवं वाल्मीकि जाति वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) -

1. थारू एवं वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्थिति ज्ञात करना।
2. थारू एवं वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
3. थारू एवं वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का पता लगाना।
4. थारू एवं वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजार्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. थारू एवं वाल्मीकिजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि पर सामाजार्थिक स्थिति के प्रभाव को ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं :

1. थारू तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. थारू तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
3. उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले थारू जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।
4. उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

5. थारू जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
6. वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
7. वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
8. थारू जाति के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitation of the Study)

यह शोध बलरामपुर जिला के पचपेड़वा, गैसड़ी, और तुलसीपुर विकासखंड के ग्रामीण अंचलों की 6 शालाओं के 155 विद्यार्थियों तक परिसीमित है। बलरामपुर अपने आप में इतिहास छिपाये नेपाल से सटा एक प्राचीनतम जिला है जो नेपाल के भाभर नदी से जुड़े कोइलाबाशा पहाड़ क्षेत्र के अंतर्गत आता है। इस जिले तथा इसके आस पास थारू प्रजाति बहुत ज्यादा विकसित हुई है जो नेपाल की आम प्रजाति है, जिले में थारू विकास योजना भी चलायी जाती है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि

न्यादर्श (Sample) - इस शोध हेतु अनियत प्रतिदर्श विधि (Simple Random Sampling) से कक्षा 10 वीं में अध्ययनरत 155 (58 थारू एवं 97 वाल्मीकि जाति) के विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चुना गया है, ये बलरामपुर क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हैं।

उपकरण (Tools)

1. सामाजार्थिक स्तर मापनी - SESS, R.L. Bhardwaj
2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण - स्वनिर्मित परीक्षण
3. शैक्षिक रूचि परीक्षण - S.P. Kulshreshtha

सांख्यिकीय विश्लेशण (Statistical Operation) – परिकल्पना क्रमांक – 01: थारू तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 01

समूह	N	M	SD	DF	CR	परिणाम
थारू जाति के विद्यार्थी	58	51.034	13.6	114	4.95	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है।
वाल्मीकि जानजाति के विद्यार्थी	58	39.387	15.1			

व्याख्या - थारू जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 51.034 तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 39.387 है। इन दोनों मध्यमानों का अंतर 11. 647 है। इस मध्यमानों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये क्रांतिक अनुपात (C.R.) की गणना की गई जिसका मान 4.9593 प्राप्त हुआ। जबकि (C.R.) तालिका के अनुसार 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर (C.R.) का मान 2.58 व 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर 1.96 है। प्राप्त (C.R.) का मान दोनों विश्वास स्तर के मानों से अधिक है अतः मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर परिकल्पना क्रमांक 1 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:- थारू तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना क्रमांक 02: थारू तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 02

समूह	N	M	Sd	DF	CR	परिणाम
थारू	58	56.206	13.5	114	1.389	सार्थक अंतर नहीं है
वाल्मीकि	58	53.144	12.9			

व्याख्या – थारू जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान 56.206 तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान 53.144 है दोनों मध्यमानों का अंतर 3.062 है। इन मध्यमानों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) की गणना की गई। क्रांतिक अनुपात का मान 1.389 प्राप्त हुआ। (C.R.) तालिका के अनुसार 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर (C.R.) का मान कम से कम

2.58 है एवं 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर कम से कम 1.96 है। प्राप्त (C.R.) का मान दोनों विश्वास स्तर के मान से कम है। अतः परिकल्पना क्रमांक-02 की पुष्टि नहीं होती है।

निष्कर्ष : थारू तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः थारू तथा वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक रूचि समान दिखाई देती है।

परिकल्पना क्रमांक 03: उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले थारू जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 03, 04

समूह	N	M	SD	DF	परिणाम
थारू	58	45.74	5.314	114	उच्च सामाजिक स्तर का एक भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती है।
वाल्मीकि	58	46.58	6.77		

व्याख्या :- उच्च सामाजार्थिक स्तर का 1 भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। अधिकांश विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर मध्यम एवं कुछ विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर निम्न पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04: उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

व्याख्या :- उच्च सामाजार्थिक स्तर का 1 भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। अधिकांश विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर मध्यम एवं कुछ विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर निम्न पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05: थारू जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 05 एवं 06

समूह	N	M	SD		R	परिणाम
थारू	58	56.206	51.034	13.6	0.1002	+ ve सहसंबंध
वाल्मीकि	58	53.144	39.387	15.1	0.114	-ve सहसंबंध

व्याख्याः- थारू जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक 0.1002 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षणों में निम्न धनात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है अतः परिकल्पना क्रमांक 05 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक 06: वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा। व्याख्या :- वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.114 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षण में निम्न कोटि के ऋणात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है । अतः परिकल्पना क्रमांक-06 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक 07: वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 07, 08

समूह	N	M		SD		R	परिणाम
थारू	58	45.74	56.204	5.314	13.6	-0.279	+ ve सहसंबंध
वाल्मीकि	58	46.587	39.38	12.9	6.77	-0.106	-ve सहसंबंध

व्याख्या :- वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.106 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षणों में अत्यंत न्यून स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्शित करता है। अतः परिकल्पना 07 की पुष्टि नहीं होती।

परिकल्पना क्रमांक- 08 थारू जाति के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जावेगा।

व्याख्या :- थारू जाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्तर एवं शैक्षिक रूचि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.279 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षण में न्यून स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्शित करता है अतः परिकल्पना क्रमांक 8 की पुष्टि नहीं होती है।

निष्कर्ष (Conclusions)

1. दोनों की जातियों के विद्यार्थियों के परिवार का शैक्षिक वातावरण समान होने के कारण शिक्षा के प्रति रूचि भी लगभग समान है।
2. थारू एवं वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों में उच्च सामाजार्थिक स्तर के विद्यार्थी नहीं मिले इसका कारण ग्रामीण परिवेश में अभिभावकों में शिक्षा के प्रति रूचि का अभाव, गांव में उचित शैक्षिक वातावरण का न होना, रूढ़िवादिता, सामाजिक बुराईयाँ, अशिक्षा, गरीबी, कन्या शिक्षा के प्रति पालकों का नकारात्मक दृष्टिकोण एवं इस क्षेत्र की समसामयिक एवं आंतरिक वातावरण भी हो सकते हैं।
3. वाल्मीकि जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। 4. वाल्मीकि एवं थारू जाति के विद्यार्थियों को सामाजार्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है।

सुझाव (Suggestions)

1. पाठ्यचर्चा एवं पाठ्यपुस्तकों को ग्रामीण परिवेश के स्तर के अनुरूप बनाया जाये जिससे अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रूचि जागृत हो।
2. शिक्षाकर्मियों की नियुक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में हो जिनमें शिक्षिकाओं की संख्या शिक्षकों के बराबर हो जिससे ग्रामीण बालिकाओं को पढ़ने एवं सीखने के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके।
3. पुस्तकें, कापियाँ व अन्य लेखन सामग्री निर्धन परिवार के विद्यार्थियों को निःशुल्क उपलब्ध करायी जावें।
4. ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति एवं जनसंख्या के आधार पर बालिकाओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था हो ताकि दूर दराज क्षेत्रों की बालिकाओं को इसका लाभ मिल सके।
5. शिक्षक थारू एवं वाल्मीकि जाति क्षेत्रों के बच्चों के साथ अपनत्व तथा तालमेल बिठाएं।
6. शासन द्वारा बनाई गई सामाजार्थिक व शैक्षिक विकास योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार कियाजावे तथा कागजी पत्रक आदान प्रदान के बजाए वास्तविक रूप से क्रियान्वत किया जावे।

संदर्भ (References)

1. मेहता, मंजू; माहेश्वरी, प्राची और कुमार, वी. विनीत। विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में उच्चतर माध्यमिक लड़कों के व्यक्तित्व पैटर्न। जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी. 2018;34(2):295-302 ।
2. मैथिल्ली बी. किशोर छात्रों की समायोजन समस्याएँ। जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च. 2004;21(1):54-61.
3. नंचरैय्या, जी।. । नई आर्थिक नीति और दलितों पर इसके प्रभाव, जोगदंड, पी.जी. (सं.), नई अर्थव्यवस्था नीति और दलित, जयपुर: रावत प्रकाशन; c2019. p. 21-37 ।
4. ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर्स डिक्शनरी ऑफ करेंट इंग्लिश. । हॉर्न बाय ए.एस. छठा संस्करण, न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।; c2000.
5. पियागेट जे।. । बच्चे की भाषा और विचार। न्यूयॉर्क: मेरिडियन बुक्स। कार्य योजना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)। नई दिल्ली: भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग। "शिक्षा पर प्रभाव रखने वाले भारत के संविधान के प्रावधान"। उच्च शिक्षा विभाग। 2010-04-01 को लिया गया।; c1955.
6. रजनी। (1990) रचनात्मकता, मूल्यों, शैक्षणिक उपलब्धि और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के संदर्भ में गैर-अनुसूचित जाति के छात्रों के साथ अनुसूचित जाति के छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन। शैक्षिक अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण, 1988;92(1):579. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी. 1990.
7. सर्व शिक्षा अभियान। नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, भारत सरकार।; c2016.
8. तेलतुम्बडे, आनंद । अर्थिक सुधार अनी दलित शोषित (मराठी), प्रभुधा, औरंगाबाद: भारत प्रकाशन।; c1996.
9. तेलतुम्बडे, आनंद । जोगदंड में दलितों पर नए आर्थिक सुधारों का प्रभाव। पीजी (एड।), नई अर्थव्यवस्था नीति और दलित जयपुर: रावत प्रकाशन; c2020. p. 91-138 ।

10. तेलतुम्बडे, आनंद । दलितों पर साम्राज्यवादी वैश्वीकरण का प्रभाव। मुंबई प्रतिरोध संगोष्ठी में प्रस्तुत पेपर, जनवरी 2004, मुंबई।
11. थोराट, एस. और देशपांडे, आर.एस. (2001)। जाति व्यवस्था और आर्थिक असमानता: आर्थिक सिद्धांत और साक्ष्य, शाह में, घनश्याम (सं.) दलित पहचान और राजनीति: सांस्कृतिक अधीनता और दलित चुनौती। 2, 44-73. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
12. थोराट, एस । उत्पीड़न और इनकार: 1990 के दशक में दलित भेदभाव। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक। 2002;37(6):572-577.
13. ट्रो, डब्ल्यू.सी. (1960)। शिक्षण और सीखने की स्थिति में मनोविज्ञान। कैम्ब्रिज ह्यूटन कंपनी। संशोधित प्रेस, 150-153।
14. व्यास, उमा. (1992)। स्व-अवधारणा और नियंत्रण के स्थान के संबंध में अनुसूचित जाति और गैर-अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।